ISSN 0973-3914

RESEARCH Journal Of SOCIAL AND LIFE SCIENCES

PEER-REVIEWED RESEARCH JOURNAL
UGC JOURNAL NO. (OLD) 40942
IMPACT FACTOR 3.928

Indexed & Listed at: Ulrich's International Periodicals Directory
ProQuest, U.S.A. Title Id: 715205

अंक-32 | हिन्दी संस्करण | वर्ष-16 | जून 2020

2020

www.researchjournal.in

UGC Journal No. (Old) 40942,
Peer-Reviewed Research Journal
Impact Factor 3.928, ISSN 0973-3914
Vol.- 32nd, Hindi Edition, Year-16, June 2020

अम्बेडकर का धर्म दर्शन विषयक विमर्श

• नरेन्द्र कुमार बौद्ध

सारांश – अम्बेडकर का धर्म से आशय दैवीय शासन या नियमन की आदर्श प्रयोजना के प्रतिपादन से है, जिसका लक्ष्य उस सामाजिक–व्यवस्था जिसमें लोग रहते हैं। आदिम युग में मानव को धर्म की कितनी जरूरत थी, उससे अधिक आज के वैज्ञानिक युग में मनुष्य को धर्म की जरूरत है। इसलिए अम्बेडकर धर्म का दार्शनिक स्वरूप प्रस्तुत करते है ताकि धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझा जा सके। अम्बेडकर के अनुसार किसी भी धर्म के दर्शन को परखने के लिए यही वास्तविक नियम है। एक तो यह नियम लोगों को मनुष्य के आचरण में क्या सही और क्या गलत है, यह परखने एवं दूसरे, नैतिक उत्तमता जिससे सृजित है, उसका स्वरूप वर्तमान धारणाओं के अनुरूप हो। यहाँ प्रश्न उठ सकता है कि इन दो प्रकार के नियमों में से कौन सा नियम नैतिक दृष्टि से श्रेष्ठ है। उत्तर यह है कि धर्म के दर्शन को परखने के लिये दैवी होने के साथ–साथ प्राकृतिक भी होने चाहिए धर्म के दर्शन का परीक्षण करने के लिए अम्बेडकर इन्हीं नियमों को स्वीकार करते है।

मुख्य शब्द –विमर्श, धर्म, मजहब, समाज

अम्बेडकर धर्म और मजहब में फर्क करते हैं। उन्होंने धर्म के नाम पर मजहब या पाखण्ड का विरोध किया। वे मजहब को वैयक्तिक मानते हैं, क्योंकि यह ईश्वर, आत्मा, प्रार्थना, पूजा, यज्ञ, बलि, अन्धविश्वास, कर्मकाण्ड तथा रहस्य पर आधारित है। साथ ही इनके परिपालन पर बल देता है। यह नैतिकता एवं लोकहित को महत्व नहीं देता है। धर्म सामाजिक व नैतिक है, जो बुद्धि को निर्मल, व्यवहार को संयमित व परिमार्जित करता है और व्यक्ति का चरित्र–निर्माण करता है। व्यक्ति क्या करता है, क्या नहीं करता, यह उसकी धार्मिक भावनाओं के ऊपर निर्भर है। धर्म मनुष्य में आशा का संचार करता है और उसे कर्म करने की प्रेरणा देता है। लेकिन अम्बेडकर धर्म को वैज्ञानिक आधार देना चाहते हैं। इसके लिए धर्म तभी सार्थक हो सकता है, जबकि वह विवेकसंगत, सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक हो जो सभी काल में सभी मानव जाति की सेवा करता हो, लोकहित में वृद्धि करता हो। इस प्रकार के धर्म को अम्बेडकर वास्तविक धर्म कहते हैं। इसीलिए वे धर्म को अपनाते हैं और धर्म की आवश्यकता एवं महत्ता को निरूपित करते हैं। अम्बेडकर का धर्म से आशय दैवीय शासन या नियमन की आदर्श प्रयोजना के प्रतिपादन से है, जिसका लक्ष्य उस सामाजिक–व्यवस्था जिसमें लोग रहते हैं। धर्म की विवेचना में दो बातें महत्वपूर्ण होती है। एक तो धर्म की आदर्श प्रयोजना का अध्ययन और दूसरे धर्म की आदर्श प्रयोजना के मूल्याँकन की कसौटी की विवेचना।

एक वर्ग जो विज्ञान के प्रभाव से आकर्षित है, सोचता है कि धर्म समाज के लिए आवश्यक नहीं है, दुनिया को धर्म की आवश्यकता नहीं है। धर्म एक त्रुटि है इसीलिए धर्म–परित्याग आवश्यक है। दूसरा वर्ग जो मार्क्सवादी शिक्षा से प्रभावित होकर धर्म को

• अतिथि व्याख्याता, दर्शनशास्त्र विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)